

मेरी हैरानी

मैं अभी-अभी उस क्लीनिक पहुँचा था जहाँ मेरी बेटी अपनी शारीरिक पुनर्वास चिकित्सा करती है, उन पलों में से एक जिन्हें आप कभी किसी और को नहीं सौंपते, वहाँ होने का मतलब है समस्या के भीतर होना, न कि किसी खेल का दर्शक।

मैं मुझ जैसे लोगों के लिए आरक्षित जगह पर बैठ गया था, एक अकेली कुर्सी वाली छोटी मेज़, सबसे दूर पर उनकी नज़रों से नहीं।

जैसे ही मुझे लगा कि मैंने अपनी जगह पक्की कर ली है, पास की एक मेज़ से, अपनी दोपहर की झपकी और सिगरेट के बीच बैठे मरीजों ने मुझे साथ बैठने बुलाया, और उन्होंने मेरी मौजूदगी का स्वागत करने में कोई हिचक नहीं दिखाई।

उनमें से बस एक जानता था कि मैं लिखता हूँ, और जब हम अकेले होते, वह मुझे मिस्टर गिलेट बुलाया करता, एक चौड़ी, संतुष्ट मुस्कान के साथ, जबकि मैं उसे इसके लिए डाँटता, इसके सिवा कुछ और कर पाने में असमर्थ।

हम कलाब्रिया की धरती पर थे, जहाँ मुझे अगवा किया जा सकता था, वह मातृभूमि जो साठ और नब्बे के दशकों के बीच सबसे बड़े और सबसे मुनाफ़ेवाले फ़िरौती-अपहरणों की थी, आठ अंकों की रक्कमों। यहाँ कोई अपहरण नहीं हुआ, वे दूसरे इलाकों के थे, दूसरी धरती की दूसरी संस्कृति के जहाँ प्रेम शब्द का इस्तेमाल प्रेरित करने और सही ठहराने के लिए होता, और बाद में माफ़ी के लिए, क्योंकि यहाँ कोई पहले समझौते के बिना नहीं जाता था, हम सिंसिनाटी में नहीं थे।

वहाँ पससठ साल का एक प्रोफ़ेसर था और चौतीस साल की एक शिक्षिका, दोनों दिव्यांग, दोनों क्लिचेयर पर, आपस में ज्यामिति और प्राचीन भाषाओं पर बहस करते हुए, उस आत्मविश्वास के साथ जो पूरी उम्र पढ़ाने वालों में होता है। मैं बस सुनने वाला बना रहा, एक बिना टिकट का दर्शक।

जब वे खत्म हुए, दोनों मेरी ओर मुड़े और कहा: माफ़ करें, पर आप जीविका के लिए क्या करते हैं?

और मैंने, मुस्कराते हुए, जवाब दिया: मैं वे किताबें लिखता हूँ जिनसे आप जैसे प्रोफ़ेसर सीखते हैं, और मुझे सच में उम्मीद है कि आप अच्छे शिक्षक बन पाएंगे।

वे चुप हो गए, पर जैसे ही मैं चलने लगा, मैंने कहा: आह, मैं लगभग भूल ही गया था।

बिल्कुल सम्पूर्ण ज्यामितीय आकृति वर्ग नहीं है, जैसा तुम दोनों बहस करने तक उतर आए, बल्कि त्रिभुज है, मानो दो या ज़्यादा त्रिभुजों का जोड़ एक वर्ग बनाता हो, और किसी पाइथागोरस ने भी कुछ प्रमेय गढ़े थे, हालांकि मुझे याद नहीं कि उसने कितने प्रकाशित किए, बस इतना जानता हूँ कि उसने खासे बनाए।

और एक बात और, वर्णमाला का अक्षर “ज” इतालवी नहीं है, फिर भी वह हमेशा से इतनी पहचानों के लिए बुनियादी रहा है। बस याह्ने को सोचो, फिर ईसा को, फिर जूलियाना, गिलेट की सीईओ को, फिर जेजुरिकर, पी एंड जी के प्रेसिडेंट को, और फिर सोचो कि मेरा नाम फ्रेगा है, “फ” से, क्योंकि “ज” मेरे लिए बहुत भारी पड़ता, एक ऐसी हैरानी जिसकी मुझे कभी आदत न पड़ती।

फ़र्दिनान्दो

Ferdinando Frega — gillettenarrative.com